Date :- 30.1.2022

B.A (Hons)

Dr. Deepak Kumar Rajak
Assistant professor (Guest)
Deptt of History
S.P.N.P College

इतिहास के अध्ययन में मार्क्सवाद की भूमिका।

- मार्क्स ने पूँजीवाद पर चातुर्दिक हमला किया। उसने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि जिसे आप पूँजीवाद कहते हो या सामंतवाद कहते हो वह महज एक उत्पादन की प्रणाली नहीं है वह एक राजनीतिक, सामाजिक पद्धति है, वह एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण है तब उसने एक इतिहास की व्याख्या की। उसका term था द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद।

एन्टोनियो ग्राम्सी (इटली) : मार्क्स के सिद्धांत को परिवर्तित किया

- मार्क्स, मैक्स वेबर, मैक्स मूलर - एशिया कि कभी यात्रा नहीं की

- न्यूयार्क ट्रिब्युन - 1853 में मार्क्स ने न्यूयार्क में लिखा 1858 - में उसने 1857 के विद्रोह से प्रभावित होकर भारत के बारे में लिखा।

एशियाई उत्पादन प्रणाली - एशिया में तो ऊपर निरंकुश राजतंत्र है और नीचे प्रारंभिक समाजवाद है प्राच्य निरंकुश (निरंकुश शासक के संदर्भ में यह अवधारणा उभर कर आया। यह term पहले J.S. मिल के द्वारा दिया गया था Oriental despotism शब्द दिया।

और जो निरंकुश शासक है वह अपनी नौकरशाही और सिंचाई व्यवस्था पर नियंत्रण रखता है और अधिकांश चीजों पर कर के रूप में ले लेता है और थोड़ा सा भाग जो बच जाता है उस पर किसान अपना गुजारा बसर करते हैं और इस तरह से यह व्यवस्था सैकड़ों वर्षों से चलती आ रही है भारतीय समाज अपरिवर्तनशील है. उसमें परिवर्तन के गुण नहीं है अगर भारतीय समाज में परिवर्तन होता है तो कोई बाहरी तत्व के कारण ही होता है। उसका मानना है कि भारतीय समाज में परिवर्तन होगा तो ब्रिटिश हुकुमत अनजाने ही परिवर्तन ला देगा। वह

ब्रिटिश साम्राज्यवादियों का पक्ष नहीं ले रहा है लेकिन कहीं न कहीं उसमें भी यूरोपीय अहंकार आ ही चुका है

- मार्क्सवादी इतिहास लेखन कार्ल मार्क्स का अनुसार नहीं है. क्योंकी जो भारतीय मार्क्सवादी है वह कार्ल मार्क्स के विरोध मे लिखा है. मार्क्स और भारतीय मार्क्सवाद एक नहीं है दोनों मे यही फर्क है जो आप देख [illegible] मे है

- उसने कार्ल मार्क्स के द्वन्द्वात्मक सिद्धांत को तो लिया था. लेकिन उसके एशियाई उत्पादन प्रणाली के सिद्धांत को सबसे अधिक challenge मार्क्सवादी विद्वानों ने किया है। उसने कहा कि हम इस बात को नहीं मानते कि भारतीय समाज अपरिवर्तनशील है. ~~भारत~~ भारत मे भी अर्थव्यवस्था मे परिवर्तन होता है अर्थव्यवस्था मे होने वाले परिवर्तन के साथ राजनीति मे, समाज मे, एवं संस्कृति मे परिवर्तन होता चलता है, सबसे पहले D.D. कौशाम्बी, B.N दत्ता ये दो मार्क्सवादी विद्वान, जिन्होंने प्राचीन काल के इतिहास का अध्ययन किया और उन्होंने यह मान्यता रखी आगे. R.S. Sharma, D.N. Jha, V.N. yadav है ये मार्क्सवादी परम्परा के विद्वान के रूप मे उभरे। मध्यकालीन इतिहास मे सबसे पहले प्रो० हबीब (अलीगढ़ विश्वविद्यालय मे इतिहास के विभागाध्यक्ष थे) ने 1952 मे "महमूद ऑफ गजनी" लिखकर सबसे पहले मार्क्सवादी इतिहास लेखन की नींव डाली। फिर इसके बाद इरफान हबीब भी मार्क्सवादी विद्वान रहे है। आधुनिक भारत के इतिहास मे रजनी पाम दत्त, ए० आर० देसाई, एम० एन० राय

ये सब मार्क्सवादी इतिहास लेखन के रूप मे काम किया। लेकिन ये सब पहली पीढ़ी के लेखक है इनके लेखन मे थोड़ी सी त्रुटि रही है जिसको कुछ हद तक सुधारा है विपीन चन्द्र, आदित्या मुखर्जी मृदुला मुखर्जी

जहाँ तक सीमाओं की बात है तो कोई भी विचार धारा अपने आप मे पूर्ण नहीं होती, न कोई व्यक्ति पूर्ण होता है और न संस्था पूर्ण होती है सबकी अपनी सीमा है

लेकिन यह मान लेना कि मार्क्सवादी इतिहास ने भारतीय इतिहास का अपकार किया है यह मान लेना बिल्कुल गलत है

मार्क्सवादी इतिहास लेखन के उद्भव से पहले राजवंश का इतिहास लिखा जाता था। राजाओं के बारे मे उनके युद्ध के बारे मे, उनके घटना क्रम के बारे मे इतिहास मे तारीखे महत्वपूर्ण होती थी।

मार्क्सवादी इतिहास लेखन ने सबसे पहला काम यह किया उसने कहा कि देखो इतिहास मे परिवर्तन महत्वपूर्ण है परिवर्तन कि जड उन्होंने आर्थिक परिवर्तन मे खोजा। उन्होंने कहा कि जब आर्थिक परिवर्तन होता है तो राज० समाज एवं संस्कृति मे परिवर्तन होता चलता है। पहले तो उन्होंने इतिहास के अध्ययन मे अर्थव्यवस्था और समाज को रखा। इससे पहले अर्थव्यवस्था और समाज की चर्चा बहुत कम होती थी।

→ राष्ट्रवादी विद्वान ने भारतीय समाज का आदर्श रूप प्रस्तुत किया लेखने

- मार्क्सवादी विद्वाने ने पूर्व मध्य काल का Concept लाया। परन्तु उनकी सीमा क्या थी? उनकी सीमा यह थी की हर कुछ को आर्थिक कारण से देखते

NOVEMBER 2021

Sun		7	14	21	28
Mon	1	8	15	22	29
Tue	2	9	16	23	30
Wed	3	10	17	24	
Thu	4	11	18	25	
Fri	5	12	19	26	
Sat	6	13	20	27	

DECEMBER 2021

Sun		5	12	19	26
Mon		6	13	20	27
Tue		7	14	21	28
Wed	1	8	15	22	29
Thu	2	9	16	23	30
Fri	3	10	17	24	31
Sat	4	11	18	25	

गुप्तो ने राष्ट्रवादी की उत्पत्ति नहीं की बल्कि राष्ट्रवादियों ने गुप्तो की उत्पत्ति की। डी.डी. कोशाम्बी, वहीं डी.डी. कोशाम्बी कहते है कि अजन्ता, बाघ, देवगढ़ के दशावतार मंदिर, आर्यभट्ट, वराहमिहिर इन तमाम लोगो की उपलब्धियो के पीछे छोटे और पीसते हुए के लोग थे जिनके गीत गाने वाले कोई कल्हण, वत्सभट्टी, वाकुल, या हरिषेण नहीं था। उनका कहना है कि कला और साहित्य समाज के उच्च वर्ग की चेतना का प्रतिनिधित्व कर रहा है गरीबों की पीड़ा का अंकन नहीं कर रहा है।

→ बुद्ध काल का अध्ययन किया तो द्वितीय नगरीकरण का पूरा श्रेय लोहे को दे दिया।

→ मौर्य काल का अध्ययन किया तो अध्ययन का पूरा श्रेय अति केन्द्रीयकरण को दे दिया।

इसकी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप एक नया School of Historiography आया जिसे कहते है संशोधनवादी इतिहास लेखन। लेकिन संशोधनवादी इतिहास लेखन ने आंशिक रूप से मार्क्सवादियों का संशोधन किया पूरी तरह लेकिन नहीं किया।

Notes

Date :- 31.01.2022
B.A part (Hons) - I
Subject - History
Dr Deepak kumar Rajak
Assistant professor
S.R.A.P College

FEBRUARY 2022

Sun		6	13	20	27
Mon		7	14	21	28
Tue	1	8	15	22	
Wed	2	9	16	23	
Thu	3	10	17	24	
Fri	4	11	18	25	
Sat	5	12	19	26	

18 January '22 018-347 4TH WEEK TUESDAY

क्या है महायान बौद्ध पंथ एवं बोधिसत्व।

महायान बौद्ध धर्म में बुद्ध चले गए हाशिए पर और एक नया Concept आ गए वह था बोधिसत्व।
बोधिसत्व का एक मतलब आता है निःस्वार्थ सेवा निस्वार्थ सेवा से मतलब यह है जैसे बुद्ध के बारे में कहा गया कि कुछ भी हो बुद्ध तो थोड़ा स्वार्थी ही थे स्वयं निर्वाण के रास्ते पर चले गए और हमलोगों को स्वयं भटकने के लिए छोड़ गए

बोधिसत्व वह है
जो निर्वाण प्राप्त करने की योग्यता रखता हो जिसने निर्वाण प्राप्त नहीं किया है क्यों-किया है, तो उसका कहना है कि जब तक इस संसार एक-एक प्राणी को निर्वाण नहीं दिलवा देते तो हम खुद निर्वाण के रास्ते पर नहीं जाएंगे

Transfer of Merit (that's beline in Transfer of

→ बोधिसत्व एक मानव नहीं है यह एक परिकल्पना
- एक है जो आपके लिए का रहा है यह धारणा
- में फैलती चली गयी। जब लोगों में बोधिसत्व के लिए श्रद्धा आनी शुरू हुई और श्रद्धा से निकली तो बोधिसत्व की भक्ति होने लगी। और भक्ति से जुड़ गये मूर्तिपूजा। अब बोधिसत्व की मूर्ति लगी बाद में बुद्ध और बोधिसत्व दोनों के हो गया। लोगों चलकर दोनों की मूर्तियाँ बनने
बोधिसत्व में प्रमुख देवता हो अवलोकितेश्वर है
परम प्राणी हितैषी।
व्यापारी वर्ग है चूँकि उस समय Trade और का व्यापक विस्तार हुआ है तो Trade॥

के कारण एक बड़ा सम्पन्न वर्ग और भूमि अनुदान के कारण एक बहुत बड़ा, कुलीन वर्ग (धनाढ्य) भी स्थापित है उनके पास धन है लेकिन वस्तु नहीं है जबकि बोधिसत्व के पास वस्तु है तो धन नहीं है तो बोधिसत्वा के नाम पर वह बौद्ध धर्म को बड़ी मात्रा में आर्थिक अनुदान देने लगी।

- धर्म के क्षेत्र में लोक तत्व अधिक महत्वपूर्ण हो गया।

- जैन पंथ में भी ईसा के आरंभिक सदी में श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय में विभाजन हो चुका था। दिगम्बर साधू कर्नाटक क्षेत्र के आधार बना लिया। गुजरात में श्वेताम्बर साधूओं का विशेष वर्चस्व स्थापित हुआ।

→ जैसे-2 जीवन की आवश्यकताऐं बदलती है तो देवताओं एवं धर्म का Concept भी बदलता चलता है।

→ Note

आरंभिक या पुराना ब्राह्मण पंथ का आधार वेद था तो नव ब्राह्मण पंथ जिसमें भक्ति, अवतारवाद मूर्तिपूजा है तो इसका मौलिक आधार पुराण है वेद और पुराण में क्या अंतर है

वेद में धर्म का अभिजात्य रूप आया है और पुराण में धर्म का लोक तत्व आया है जिसको तथाकथित Hinduism का आरंभिक रूप कहते हो पुराणों में आया है भक्ति, अवतारवाद मूर्ति पूजा जैसे चीज पुराणों में आई है